माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार के द्वारा दिनांक–13.05.2015 को आपदा जोखिम निम्नीकरण सम्मेलन में दिया गया भाषण

विशिष्ठ अतिथिगण विभिन्न राज्यों से आये सभी आपदा प्रबंधन के कार्य में सक्रिय प्रतिनिधिगण प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के यहां उपस्थित प्रतिनिधिगण देवियों और सज्जनों। मैं सबसे पहले आपदा प्रबंधन विभाग को और राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकार को बधाई देता हूँ। जिन्होंने आपदा जोखिम न्यूनीकरण डिजस्टर रिस्क रिडक्शन सम्मेलन का आयोजन किया और उन सब लोगों का स्वागत करता हूँ जो इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आए है एक प्रतिनिधि के तौर पर। समाज के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं और अनेक सेशन में जो बैठक कर विस्तृत चर्चा करेंगे और इस डिजास्टर्स रिक्स रिडक्सन पर आधारित बिहार कांनफरेंस का मकसद है कि हम किस प्रकार से जोखिम का न्यूनिकरण करें उसके लिए क्या रोडमैप होना चाहिए और मुझे आज सचमुच खुशी हुई है सब लोगों ने अपनी बातें बहुत ही संक्षेप में कही है क्योंकि यहॉ जितने लोग मौजूद हैं सब आपदा प्रबंधन के बारे में लम्बी बातें कह सकते हैं। लेकिन उन्होंने इस सत्र में बहुत ही संक्षेप में लेकिन बहुत ही जानकारी देने वाली बातें उन्होंने की है और मुझे खुशी है कि यद्यपि आपदा प्रबंधन का दौर चला है आपदाओं का दौर तो है आपदाएं पहले भी आती रही है। अपने देश में आपदा प्रबंधन का जो कंसेप्ट है यह कोई 10–12 साल पुराना है 12–13 साल पुराना है। इसके पहले वहीं कंसेप्ट था। भाई यदि कोई आपदा आ गई कोई डिजास्टर हो गया तो हमें रिलिफ करना है रिस्क्यू करना है लोगों की सहायता करनी है मदद करनी है यह कंसेप्ट सब दिन रहा है। लेकिन जो उड़ीसा का साईक्लोन और गुजरात का भूकंप, इसने पूरे देश में चर्चा प्रारम्भ हो गई थी लेकिन उन दो घटनाओं में सोचने के लिए मजबूर किया है कि अब हम अगर तेजी से आपदा प्रबंधन के कंसेप्ट पर काम नहीं करेंगे और इसके लिए पूरी तैयारी नहीं करेंगे तो तबाही होती चली जाएगी और आपदाओं से निपटने की तैयारी। उसका फॉर्म अभी श्री अजीत सिन्हा जी ने बताया है। उसने दूसरे मुल्कों का उदाहरण दिया है। यह कोई जापान का उदाहरण दिया अपने देश में भी उदाहरण दियां जिस राज्य ने कुछ तैयारी कर ली वहां साईक्लोन से नुकसान कम होने लगा। और तब जो उड़ीसा के साईक्लोन में तबाही मची थी और इस बार आपने देखा कि फायरिंग आने के बाद वो तवाही कुछ खास नहीं हुई और अगर पेड़ गिरे तो साथ–साथ पेड़ को काट कर हटाने का भी काम शुरू हो गया। तो ये जो तैयारी है आपदा प्रबंधन की जो सबसे ज्यादा मायने रखती है। अब गुजरात में जो भुज में इपी सेंटर का भूकंप आया था। मुझे कृषि मंत्री के रूप में काम करने का अनुभव है देश में। और उस समय तक भारत सरकार में यह विषय कृषि मंत्रालय द्वारा देखा जाता था और उस समय अनील सिन्हा जी इसी खास विषय को एक ज्वाइंट सेक्रेट्ररी के रूप में देखते थे और जब बात शुरू हो गई

डिजास्टर मैनेजमेंट का जो पहला पेपर भारत सरकार ने तैयार हुआ वह उन्होंने तैयार किया और प्रजेंटेशन पूरा किया गया उसके बाद खैर से गुजरात के साईक्लोन, उड़ीसा का साईक्लोन और गुजरात का भूकम्प के बाद लोगों का ध्यान इतना गया कि उसके बाद तो पहले केन्द्र में ये फैसला हुआ कि यह विषय कुछ दिनों तक बहस चली की इसे रक्षा मंत्रालय देखे या गृह मंत्रालय देखे तो कृषि मंत्रालय से अलग करके इसको अंततोगत्वा गृह मंत्रालय के हवाले किया गया और फिर डिजास्टर मैनेजमेंट अथोरिटी बनी और इसपर बहुत सारे काम हुए। काफी काम हुआ है। और हमारे नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथोरिटी के सदस्य कमल किशोर जी भी आए हुए है। नेशनल डिजास्टर्स रिसपोंस फार्स भी बना। हम लोगों ने अपने राज्य में स्टेट डिजास्टर रिसपोंस फोर्स बनाया है। हम लोगों ने यहां के राज्य स्तर पर भी डिजास्टर मैनेजमेंट अथोरिटी का गठन किया है। देशभर में कानून बना। डिजास्टर मैनेजमेंट लॉ बना। हम लोगों ने उस कानून को स्वीकार किया और उसके हिसाब से डिजास्टर मैनेजमेंट का काम करते हैं। विस्तार से तो अलग–अलग खंड में जब सत्र होगा तो हम लोग चर्चा करेंगे। लेकिन बिहार में तो अनेक प्रकार की आपदाएं आती हैं। सूखा है, बाढ़ है, भूकम्प देख ही रहे हैं लोग झेल रहे हैं। एक महीने के अंदर दो बार लोगों को 2–3 बार झेलना पड़ गया। अब जो इस बार साईक्लोनिक स्टोर्म आया पूर्णियां में तो जब मुझे सुबह इसके बारे में जानकारी मिली तो हमने तुरत निर्णय लिया कि हम वहां जाएँ और जब जाने के बारे में हमने फैसला किया तो पहले जो पूर्णियां का एयर बेस है उनलोगों ने कहा यहां अभी लैण्ड करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। तो हमारे अधिकारियों ने भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय से बातचीत की और अंततोगत्वा उस एयर फोर्स बेस पर लैंडिंग की इजाजत मिली। लेकिन वह स्वाभाविक है कि जब पता चला कि साईक्लोन स्टोर्म से जो एयर बेस का अपना ए0टी0सी0 का टावर है वह उड़ गया था वह उड़ गया है उसका छत उड़ गया है तो हम वहां बैठे एयरपोर्ट वहां के जो ऑफिसर्स थे उनके साथ हमने चर्चा की और जानकारी लेने की कोशिश कि तो उस समय की स्थिति तो ऐसी थी कि हमारे पूर्णियां कमिश्नरी के कमिश्नर और डी0एम0 सब वहां पहुंच चुके थे। लेकिन हमने जानने की कोशिश की कि यह है क्या है। ये हुआ क्या है। हेलीकॉपटर से लो हाईट पर फ्लाईट करके समझने की कोशिश की। मैने बहुत कुछ समझने की कोशिश की बर्बादी। कैसे हुई इसका ट्रेंड क्या है और उसके पीछे मेरा दिमाग काम कर रहा था। 2010 में भी उस इलाके में ऐसा ही तूफान आया था और उस समय भी हम तत्काल वहां पहुंचे थे तो हमने जो एक ट्रेंड देखा था वो ट्रेंड इस बार नहीं था। उस बार हमने देखा था कि बीच में जो वहां टीन का करकट होता है उसकी छावनी होती है तो हमने देखा की बीच में वहा टीन का उसका छत उखडो हुआ है और फिर बगल में हमने देखा की सही सलामत है। तो फिर हमने समझने की कोशिश की तो आर्या साहब उस दिन पटना में नहीं थे वे दिल्ली में थे तो उनको बुलाया गया। और फिर हमने कहा की आप जरा अध्ययन करके बताइये। तो ये वहां गए और लौट कर बताया कि साहब वो तो टवीस्टर था

ट्रोर्नाडों था वह साईक्लोनिक स्टोर्म नहीं था। अब लोग कहां फर्क करना जानते है। और इन्होंने समझाया की इसका क्या इमपैक्ट होता है। किस तरह से हवा उपर से आती है और नीचे से अपरूट कर देती है जमीन पर जाने के बाद और फिर जाकर वहां इन्होंने देखा और फिर अध्ययन करने के बाद लोगों को बताया कि भाई अगर ये करकट की छावनी होती है तो इसे अंदर से क्रॉस से बांधिये। और इसका खूब प्रचार किया गया इस टवीस्टर पर कोई नुकसान नहीं होगा यानि नुकसान होने की संभावना घट जायेगी और उस समय हम लोगों ने पूरा प्रचार किया तो इस बार मेरी सबसे ज्यादा क्यूरीसीटी थी तबाही को देखेने के अलावे ताकि लोगों को तत्काल राहत पहुंचाया जा सके। हमारे अधिकारियों को फर्क नहीं मालूम था लेकिन जो एयर फोर्स के जो अधिकारी बैठे हुए थे तो हमने उनसे पूछा की ये क्या है तो उन्होंने बताया कि ये तो साईकालोनिक था तो हमने पूछा की इसकी गति क्या होगी तो एकबारगी उन्होंने कहा कि हमने उनसे पूछा की आपके नेट का मिटीयरलोजिकल डिपार्टमेंट है उसने क्या कहा। तो उन्होंने कहा की हम लोग डाउनलोड नहीं कर पा रहे हैं बिजली चली गई है। सारे बिजली का जो नेटवर्क था वो टूट गया था उसके चलते। तो उन्होंने कहा कि 200 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से ज्यादा थी तो बहुत आश्चर्यचकित हुये। तो हमने कहा कि डिजाईन मैक्सीमम तय क्या किया गया 150 किलोमीटर स्पीड का उन्होंने डिजाईन किया गया है तो चलिए हमने माना कि अगर उससे ज्यादा 200 से 220 तक पहुंच गया तो देखेंगे की डिजास्टर लोड करेंगे ओर उसका बारे में बता पायेंगे। जब हम दुबारा तीन दिन के बाद गए तो पता चला कि ये 187 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से था साईक्लोनिक स्टोर्म। अब बताईए कि इस पूरे इलाके में कोई चीज डिजाईन नहीं है और कोई सोचता भी नहीं कि हमारे इलाके में आयेगा। मैंने चर्चा इसलिए किया कि हम तो साईक्लोनिक स्टोर्म को भी झेल रहे है टोर्नाडों को भी झेल रहे हैं और साईक्लोन जो बढ़ते ही है हमारे यहां 28 बाढ़ प्रभावित जिले है। 2007 में जो बाढ़ आया था फिर 2008 का कोशी ट्रेजडी का जिक्र करते हैं जो चर्चा बहुत हो गई थी लेकिन मैं मानता हूँ कि लोग जितने प्रभावित हुए थे 2007 में 22 जिले में बाढ़ आई थी और ढाई करोड़ लोग प्रभावित हुए थे अब तक बिहार में जितने बाढ़ रिकार्डेड है वे सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाने वाला बाढ़ था। ढाई करोड़ लोग इफैक्टेड थे और 22 जिलों में उसका प्रभाव था। तो यहां बाढ़ आती है, सूखा पड़ता है आप देख लिजिए मानूसन का हाल। शुरू में कुछ वर्षा हो गई लगातार महीने डेढ़ महीने ड्राई स्पेल रहेगा और हम लोग सूखा घोषित करते हैं और फिर उसके बाद अचानक अगस्त के अंत में वर्षा हो जायेगी तो हमारा जो मेन क्रॉप था धान ... का उसका अच्छादन कभरेज ही नहीं हो पाता है कृषि विभाग तो कागज पर बता देता है 60–70 प्रतिशत। लेकिन मेरे हिसाब से 50 प्रतिशत से कम ही आच्छादन हुआ है तो यह हालत होती है अब इसके बाद देखिये कि खरीफ की फसल बर्बाद होती थी तो रब्बी पर भरोसा रहता था। रब्बी ठीक हो जाता था। अब पिछले तीन–चार वर्षों में देख रहे हैं कि रब्बी बम्मपर हुआ और फुड क्रॉप हुआ। मक्का की फसल अच्छी हुई, गेहूँ

की फसल अच्छी हुई, मसूर, चना जो भी लोग उपजाते हैं खूब अच्छा हुआ। इस बार क्या हुआ साहब। एक तो धान को नुकसान हो गया कभरेज कम और उसके बाद रब्बी का समय आया तो ठंड इतना प्रोलॉग हो गया कि फरवरी महीने में ठंढ का कोल्ड वेब आया। उसके चलते मसूर की फसल सब नष्ट। इस बार मार्च में जो कुछ भी हुआ अतिवृष्टि, ओलावृष्टि सबकुछ तबाह। इतना ज्यादा तबाही हुई है बर्बादी हुई है। तो हम तो अनेक प्रकार की आपदाओं को झेलते हैं। ड्राउट को झेलते है, फ्लड को झेलते हैं, साईकलोन, ट्रोर्नाडो, भूकम्प हर प्रकार की आपदा झेलने को मजबूर हैं। हम ऐसी जगह पर अवस्थित हैं। हमारी सबसे बड़ी खासियत है कि बिहार के लोग मेहनती हैं, साहसी है और उनके मन में धैर्य है। ये सबसे बड़ी पूँजी है हमारी और इसके एक आपदा के बाद दूसरा आपदा झेलते हुए हम लोग आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हमने इन घटनाओं का जिक्र इसलिए किया कि साहब हमलोगों ने इससे सबक सीख कर अब प्रत्येक चीज के लिए स्टैण्डर्ड ऑफ प्रोसिज्योर बना दिया है मानक प्रक्रिया और उसको बाजावता एक तरह से जिसको कहते हैं कैलेरिफायड करना उस तरह से किया है कि ऐसी स्थिति में क्या होगा अब ये नहीं की कोई आपदा आ गई और आपके कलक्टर को निदेश दे दिया और कलक्टर कुछ करना चाह रहे हैं और सरकार का जो सर्कूलर है उसका इन्टर प्रटेशन किया जा सकता है उसका इन्टर पेटेशन किया जा सकता है और अगर कोई कैलेरिफिकेशन मांगता था पहले तो यहां से जो कैलेरिफिकेशन भेजा जाता था वह भी ऐसा होता था कि अब कलेक्टर को ही इन्टरप्रेट करना और कोई कलेक्टर चाहता था तो इसमें कैलेरिटी हो तो डॉट खाता था कि तुम किसलिए कलेक्टर बन गए हो इतनी ही बात तुमको समझ में नहीं आती है और इस बात को हमने नोटिस किया था कि साहब कैलेरिटी नहीं हो, जो दिशा निर्देश जारी किये जाते है उसमें कहीं–न–कहीं कैलेरिटी की कमी है और इसके चलते काम में बाधा उत्पन्न होती है। इसलिए हमलोगों ने तय किया कि प्रत्येक चीज के लिए एक–एक चीज। कहीं कोई कंफयूजन की गुंजाईश नहीं है। और यही कारण है कि आज आप देखेंगे कि घटना घटती है और उसके तत्काल बाद राहत पहुँचाई जाती है। अग्नि कांड, और इस बार तो कोई वैसी गर्मी ही नहीं पड़ रही है। मई का महीना है कल का क्या दृश्य था आपमें से जो मॉर्निंग वॉक सुबह–सबेरे टहलते हुए उनको अहसास हुआ होगा। सुबह जब टहल कर बैठा तो बादल का रंगत देख करके मुझे बहुत दुख हुआ। ऐसा लग रहा था कि एकदम बिल्कुल माहौल ही डिप्रेशिव है। इतना बुरा फिर तेज हवा बहुत ही खराब एक जैसा–तैसा अहसास हो रहा था और कौन लोग जानता था कि सुबह जो अहसास खराब हो रहा है और वो दिन में भूकम्प का अहसास करना पड़ेगा। तो परसो रात और कल सुबह उससे भी हमारे यहां नुकसान हुआ और भूकम्प से भी नुकसान हुआ है। अभी तो खैरियत है की एपी सेंटर हिमालय के अंदर है और उसके चलते जो भी एनर्जी डिसिपेट करती होगी वो पहाड़ों में कैप होकर रह जा रही है बाहर नहीं आ रही है। इससे झटका तो जरूर लगता है। और रिक्टर स्केल पर तो एपी सेंटर जहां पर है वही का पैमाना पर जो भूकम्प की स्थिति

तो ऐसी है और हमारी तैयारी का यह हालत है कि जब गुजरात का जिक्र कर रहा था और उस समय जो भूकम्प आया था तो हमने गुजरात भी जाकर देखा था और चूंकि एग्रीकल्चर मिनिस्टरी को ही उसके बारे में सबकुछ जवाब देना था पारलियामेंट में तो हम उसकी–उसकी उसके लिए हमारे स्तर पर मींटिग होती थी तो जब एक मीटिंग हो रही थी तो जितने इसके विशेषज्ञ लोग थे मीटिंग में थे और उन लोगों ने बताया कि सुन लिजिए जिस तरह से भुज एपी सेंटर था भूकम्प का और 6.8 रिक्टर स्केल पर उसकी इटेंसिटी थी उन्होंने मुझको कहा कि अगर इस इंटेनसिटी का भूकम्प का एपी सेंटर अगर पटना में होगा तो सर आपके पटना में 5 लाख लोग मरेंगे। स्ट्रेट वे में उन्होंने कहा कि बहुत ही सहज ढंग से ये बात तो हम उनको देखते रहे। उन्होंने कहा आप जानते ही है कि भूकम्प से सब लोग थोड़े ही मरते हैं। भूकम्प से जो मकान ढहते हैं उनके मलबों में दबकर लोग मरते हैं और अगर बिहार के लोगों ने मुझको यहां काम करने का मौका दिया तो मैं 2006 से कम–से–कम एक दर्जन बार ये चेतावनी दे चुका हूँ। कितने मकान बन रहे हैं। आज जरा कल्पना करिये कि पटना में कितने ही मकान थे कितने ही मकान थे पटना में। इतनी ही मल्टीस्टोरीज बिल्डिंग थे इतनी संख्या में। मल्टीस्टोरीज बिल्डिंग बनीं। कभी–कभी तो मैं पटना शहर के अंदर कहीं किसी जिसको कहते हैं कि आज ....सामाजिक कार्यों के चलते आप जानते हैं कभी–कभी जाने के बाद तो ऐसा महसूस होता है कि साहब यहां होता क्या है अगर पटना एपी सेंटर होगा तो भूकम्प के झटकों में तो मकान गिरेगे तो मुझको याद आता है कि उनलोगों ने मुझे ठीक ही कहा था पटना का क्या होगा। हमारे यहां के लोगों को प्रसन्नता होती है कि जो जगह हमको छोड़नी है वह जगह न छोड़ कर और थोड़ा बहुत आगे बढ़ जाते हैं, इनक्रोच करते हैं पता नहीं किसके साथ धोखा दे रहे हैं। ये सब लोग अपने साथ धोखा दे रहे हैं। यह तो पटना हाई कोर्ट को मैं बधाई देता हूँ कि उनके प्रयास से बिहार में अन्दर की कुछ सड़क चौड़ी हो गई। वरना कौन सुनता है साहब यहां। लोग इनक्रोच करते हैं। एकबार गए थे दीघा में देखने के लिए और पता नहीं बीच में कोई जगह नहीं यानि बिजली के पोल नहीं गाड़े जा सकते इस–इस ढंग से मकान बनते गए और बाद के दिनों में भी मकान बने और गया सिंह बता रहे थे कि मकान बनाने वाले क्षेत्र में जो सक्रिय लोग हैं उनको आमंत्रित करते है। अब ये जो आप सोच रहे है कि भूकम्प में जो मकान नहीं गिर रहा तो बहुत ज्यादा प्रसन्न होने की जरूरत नहीं है। भूकम्प के झटको का अहसास होगा आपको भूकम्प का केन्द्र यहॉ नहीं है अभी तो पहाड़ पर है। भूकम्प का केन्द्र अगर प्लेन में होगा, मैदानी इलाके में होगा। तो उसका क्या असर होगा। बता रहे थे आर्या साहब, सुना होगा सुन लिजिए। वैसे तो सब को मालूम है। सब को जाना ही है कब जाना है कैसे जाना है पता ही है। इतना ही संतोष कर लिजिए। लेकिन भाई लोग आत्महत्या करने से क्या फायदा। यह तो आत्महत्या के समान है। हम बना सकते हैं सेफ्टी बिल्डिंग और अगर सेफ्टी बिल्डिंग नहीं बनाए तो बिल्डिंग बाई लॉज बना है और उसमें हम लोगों ने इन सारे चीजों का प्रावधान किया है। कृपा कर के उसका पालन करीये और अभी चीफ

सेक्रेटरी साहब बता रहे थे कि प्रारम्भ से ही हम लोगों का यह नजरिया रहा है कि भाई सरकारी मकान बने तो भूकम्परोधी बने अगर कोई मकान भूकम्परोधी नहीं बनायेगा तो वह तो अपराध है, क्राईम है। यह कोई निर्णय का चूक नहीं है। भूकम्परोधी मकान बनना ही चाहिए। चाहे स्कूल की बिल्डिंग हो, अस्पताल हो, दफ्तर हो। आप किसी प्रकार की बिल्डिंग बनाए और उसी तरह से लोगों के घर भी बनाना चाहिए। लोगों को कोई नुकसान नहीं हुई है। यह एक संयोग है लेकिन जो सबसे बड़ी चीज है कि इसने चेतावनी दे दी है। लोग भूकम्प की बात पढ़ते रहे। अब लोगों ने महसूस कर लिया है और हमने देखा की 25 को तो खैर दिल्ली में था तुरंत भागा–भागा यहां । आपदा जो लोगों के मन में दहशत का भाव सब को सता रहा था । भाई घबराइये नहीं थोड़ा असर पड़ता है इसमें मनुष्य अपने को तैयार करता है अगले दिन शाम में घूम रहा था तो मुझे एक चीज को देखकर संतोष लगा कि इस बार उतनी दहशत नहीं है। मतलब क्या है भूकम्प पर काफी चर्चा हुई है। क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए इसके बारे में भी लोगों ने बातचीत की है। तो अब सबसे बड़ी बात है कि इसके लिए पूरी तैयारी और जो बिल्डिंगस है उसकी रेट्रोपिटी। सरकारी बिल्डिंग की रेट्रोपिटी तो हम लोग करा देगें। अभी हम कर रहे थे तो यही पर बैठे हुए थे कि हर चीज में पूछते हैं कि सरकार क्या करेगी।

रियल स्टेट का व्यापार कर रहे है, तो व्यापार करने के लिए मकान बनाकर बेचने के लिए पैसा है और रेट्रोपिटी के लिए पैसा नहीं है। रेट्रोपिटी किजिए लोग भी अब कांसस होंगे कि मकान वही खरीदेंगे फ्लैटस् वही लेंगे उसीमें अपनी बुकिंग करायेगे जो भूकम्परोधी बने। अब जापान का उदाहरण उन्होंने चिली उदाहरण दिया। साहब जापान में तो आये दिन भूकम्प आते हैं लेकिन किस तरह से जापान ने अपने मकान बनाये हैं कि अब उसके चलते नुकसान नहीं होता है तो सैड्रेल में जो भी हुआ है उसके रिस्क को घटाने के लिए जो लक्ष्य रखे गए है तो भाई ठीक है लोगों की मृत्यु अब कम होने लगी। लेकिन नुकसान बढ़ा है। फसलों का नुकसान बढ़ा है अन्य प्रकार से नुकसान बढ़ा है। उसको कैसे कम करेंगे। यह किसी देश की कुल जो आमदनी है जी0डी0पी0 ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोड्कट उसमें कम–से–कम कैसे नुकसान। नुकसान तभी कम होगा जब हम इसके लिए पूरी तैयारी कर लेगें। जब मालूम है बाढ़ आनी है, मालूम है कि भूकम्प आना है और भूकम्प के बारे में तो कोई भविष्यवाणी नहीं है बाढ़ के बारे में तो जान सकता है। लेकिन ये भूकम्प का क्या करें। भूकम्प देख लिजिए एक–से–एक शैतान लोग भी समाज में हैं। 25 तारीख को जब भूकम्प आया किस किस तरह के शैतानीभरा लोगों ने वॉट्ससॉप पर और सोशल मीडिया का सहार लेकर के प्रचार किया कह दिया मौसम विभाग छतीसगढ़ रायपूर और कह दिया कि इतना बजे 9:00 बजकर इतने मिनट 12 बजकर इतने मिनट इतने बजे 9:00 बजकर इतने मिनट पर 12 बजकर इतने मिनट रिक्टर स्केल पर भूकम्प आयेगा उसको तो ढूँढ़कर के निकालना चाहिए और कहना चाहिए आप इतने बड़े भविष्यवक्ता है तो

आपको दुनिया का सब पुरस्कार मिल जायेगा। चूंकि भविष्यवाणी बता दिए फॉर कास्ट करके भूकम्प का। तो ऐसे शैतान ने हल्ला कर दिया कि चांद उल्टा हो गया। और जब बहुत आदमी आरगुमेट कर रहा है कि नहीं साहब चांद उल्ट है तो हमने कहा कि पिछले साल का और आज के दिन का जो चांद है आपके पास फोटो है लेकर आईये और दोनों को मिलाये उल्टा है कि सीधा पता चल जायेगा। कितने लोग हैं इस तरह के अब पता नहीं सही बात लोगों को बताई तो उसको सुनने का फुर्सत नहीं है सुन भी लेगे तो कितना यकीन करेंगे, नहीं करेंगे आ झूठ फैलाई तो दो मिनट वो मसालेदार होता है झूठ, चटपटा होता है उसको तुरंत लोग फैलाने लगते है। एक दूसरे से बात करते हैं कि चांद उल्टा हो गया अब चांद देख रहे हैं कोई कल तो देखा नहीं था चांद या पिछले साल के इस दिन का चांद कैसा था ये तो किसी ने देखा नहीं, चांद उल्टा हो गया, चांद उल्टा हो गया। आधा आदमी का डर के मारे हालत खराब हम लोग भी देखने के लिए निकले की कह रहा है कि चांद उल्टा हो गया है आखिर हुआ क्या है? इसमें तो कुछ भी उल्टा नहीं नजर आ रहा है। लेकिन बहस करने वाले लोग भी मिल गए उनको एक–दो नहीं साहब आप समझ नहीं रहे है थोड़ा समझीये कुछ है न। अब इसका कौन उपाय है। साहब लेकिन मुझे खुशी है कि अगर लोगों ने सोशल मीडिया का दूरूपयोग करके अफवाह फैलाकर दहशत का माहौल पैदा किया तो इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने और प्रिंट मीडिया ने उसका काट किया और लोगों के मन से डर निकाला और मैं समझता हूँ कि उसी का परिणाम है कि अब तक कोई अफवाह वाला चैप्टर सुनने को नहीं मिला है। अभी तक कोई ऐसा रिपोर्टेड नहीं है लेकिन पहले जो हुआ तुरंत हमने व्यासजी को कहा कि आप और डी0जी0पी0 मिल के प्रेस कॉफ्रेंस कर के कहिये की ये झूठ है और यह जो बदमाशी कर रहा है इसको हम लोग पकड़ेगें, तो अफवाह से तो बचना ही चाहिए। ऐसे मौका पर। लेकिन मुझे लगा है कि धीरे–धीरे अवेयरनेस बढ़ा है तो ये बहुत ही सही समय है। इन्होंने तो 13 तारीख और 14 तारीख को ये आपदा जोखिम न्यूनिकरण पर सम्मेलन डिजॉस्टर रिस्क रिडक्शन पर सम्मेलन तो पहले से तय किया तो पहले ही ये बैकग्रांउण्ड बना दिया है नेचर में। कल फिर भूकम्प के झटके ने एक बैकग्रांउण्ड बना दिया कि भाई ये इसू है। बहुत लोग समझते नहीं है कि क्या इसू है, क्या मुद्दा है। लेकिन यह मुद्दा है बहुत ही गंभीर मुद्दा है और बहुत ही जरूरी मुद्दा है। इसपर सबको चर्चा करनी चाहिए और सबको सोचना चाहिए और मिलजुलकर यह बुरी स्थिति का मुकाबला कर सकते हैं तो हर परिस्थिति में हमारे स्ट्रक्चर्स बने। कुछ सेप बने और यही नहीं एक चीज ही नहीं सभी चीजों के लिए अलग–अलग किस्म के हैं। लेकिन स्ट्रक्चर्स ऐसी चीज है जिसपर असर हर आपदा में पड़ता है। चाहे वह साईकलोन हो, चाहे वह भूकम्प हो, टोर्नाडो हो, सब स्थिति में उसपर असर पड़ता है तो वैसी चीजों पर ध्यान देना चाहिए और मुझे प्रसन्नता है कि अब हमारे यहां भी इस विषय पर काम हो रहा है। और मैं धन्यवाद देता हूँ राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकार के सदस्य श्री कमल किशोर जी का ये हमारे जो पिछले बार स्टेट डिजास्टर मैनेजमेंट अथोरिटी की मीटिंग हुई थी उसमें

उन्होंने भाग लिया था। समय निकाला था और जिस स्तर पर हमलोगों के यहां काम हो रहा है या चर्चा हो रही है उसकी उन्होंने सराहना की। हम लोग यही चाहते हैं कि हमारी तैयारी पूरी हो और जैसा नारा इन्होंने अनिल सिन्हा ने दिया है ये घर–घर पहुँचायें एक–एक बच्चा से लेकर किसी उम्र के व्यक्ति को कुछ बुनियादी बातों की जानकारी हो जाए और सिर्फ जानकारी न हो जाए बल्कि अनेक प्रकार के मॉक ड्रिल के जरिये लोगों को कुछ अनुभव ऐसा हो जाए कि ऐसी परिस्थिति में उसका उपयोग करें और आपदाएँ आती हैं तो उस परिस्थिति में उसका धैर्य के साथ मुकाबला कर सके। आपदाएँ आती है और एक विचित्र संयोग है देखिए पूरी धरती अनस्टेबुल है ये तो गोला है अंदर आग है तो वो बिलकुल कई चीजें है और जापान देखिये ज्वालामुखी का भी शिकार है। भूकम्प तो अनेक प्रकार से होता है और अपने भारत के बारे में हम लोग सोचते हैं भाई ये जो हिमालय है यह तो बढ़ रहा है और ये जो पूरा अपने कंट्री का जो लैंड–मास है यह हर साल 5 से0मी0 उत्तर की ओर खिसक रहा है हर साल जैसे नाखून बढ़ता है जैसे हम सब का नाखून बढ़ता है लगभग उसी रफ्तार से एक सप्ताह नहीं बनाते हैं तो पता चल जाता है 15वें दिन हमारा नाखून बहुत बढ़ा हुआ है तो लगभग उसी रफ्तार से ये जो अपनी भूमि है वो उत्तर की ओर खिसक रही है। तो हर चीज अनस्टेबुल है। लेकिन सब जगह जो इस प्रकार पूरे धरती में कहीं न कहीं भूकम्प आता है कुछ होता रहता है तो ये जो अस्थिरता है पूरे और अब उसीमें जीवन है जो मिश्रा जी ने कहा **''क्षितिजन पावक गगन समीरा''** तो भाई ये जबतक है उसी समय तक जीवन है। जिस दिन ये धरती स्टेबलाईज कर जायेगी ये न होटल रहेगा और न हम रहेगे और न आप रहेगे कुछ भी नहीं रहेगा फिर पता नहीं जीव–जन्तु कहां से आयेंगे फिर किसी और सौर मंडल में कोई इस प्रकार का कोई दृश्य होगा इसलिए अब उसके लिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। करोड़ों, अरबों साल लगेगा। अभी हम लोग जीयेंगे। बहुत आदमी से इसपर चर्चा होती है कि हमलोगों का जीवन निकल जायेगा तो हमारे साथ मेरे सहयोगी हैं काम करते है बहुत लंबे समय से उन्होंने कहा कि चलिये सर हमलोगों का जीवन तो निकल जायेगा। हमने कहा कि मुक्ति है क्या फिर इसीमें जन्म लिजियेगा इसीमें काम किजियेगा तो इस पूरी स्थिति के तथ्य को समझना चाहिए और धैर्य के साथ रहना चाहिए। धबराहट से काम नहीं करना चाहिए होना है जो होगा लेकिन नुकसान नहीं होगा। भूकम्प आना है तो आयेगा लेकिन नुकसान नहीं होगा और फिर आप चैन के साथ रह पायेंगे। यह तो पूरा का पूरा थीम इस सम्मेलन का यही है और इसके आधार पर हम लोग रोड मैप बनायेंगे तो जैसे आज अगर कोई आपदा आती है तो राहत तत्काल पहुँचता है उसी तरह से इसी स्प्रीट के साथ काम करते हुए हम अपने स्ट्रक्चर भी ऐसा बनायेगे ताकि आपदाओं की स्थिति में भी हम स्टैण्ड करे वो कायम रहे और नुकसान लोगों का नहीं हो तो यह इसका थीम है आप सब लोग बैठे हुए है और जब इतनी दिलचस्पी से हम देख रहे हैं इस काम को तो हम समझते है इस भूकम्प वैगरह नहीं आया तो एक मायने में भूकम्प ने आकर अच्छा ही किया है कि हमलोगों को जगा दिया है चेतावनी दे दी है तो

उससे सबक सीखते हुए हम लोगों को काम करना है। उसके लिए तैयारी करनी है और मनुष्य का तो स्वभाव है प्रेरणा। आप कल्पना करिये की किस किस दौर से निकल कर आये है आज जो हम लोगों का रूप है यह ऐसा रूप था कितना इवोक क्या है कि सब चीज तो हम समझते हैं कि इभोलूसन की ये प्रक्रिया रहेगी और हम सब लोग मिलकर ये धरती की जो खूबसूरती है इसका आनन्द उठाने का जो अवसर मिला है। हम अपने हाथ से इस धरती की खूबसूरती को खराब नहीं करेंगे, समाप्त नहीं करेंगे। इसकी जो प्राकृतिक खूबसूरती है इसको बनाये रखते हुए हम अपने इस्तमाल के लिए हमें सबसे बड़ी समस्या तो हो गई है कि पृथ्वी पर हर किसी की आबादी कितनी बढ़ी लेकिन सब की जरूरतों की पूर्ति हो जायेगी, लेकिन लालच की पूर्ति नहीं होगी, आज समस्या पैदा हुआ है बहुत कुछ ग्रीड के कारण लालच के कारण तो खैर वह है एक अलग विषय है अभी तो हम लोग बिलकुल व्यावहारिक नजरिया अपनाये। और घर लेते हैं तो रहने लायक घर लिजिए। ऐसा न हो कि जैसा इन्होंने बताया, पर्सनलि अनिल सिन्हा जी ने बहुत अच्छे ढंग से बताया कि कोई चुप बैठ जायेगा जो होना है हो जाए कोई धरपड़ा कर कूद जायेगा। तो अलग जो कैटोगरी है उसी तरह के हम सब लोगों को मानसिकता तो दोनों काम करना है। हम लोगों को पूरी तैयारी भी करनी है और अपनी भी तैयारी करनी है और अपने परिवेश में युग के उसी हिसाब से ठीक–ठाक ढंग से बनाना है। यही इसका मकसद है और मैं समझता हूँ कि इसमें जितने विशेषज्ञ हैं भाग ले रहे हैं दो दिनों के अंदर इतने विचार आयेंगे कि उसके आधार पर हम डिजास्टर रिस्क रिडक्शन के लिए एक रोड मैप बना पायेंगे और मैं इतना आपको आश्वस्त करता हूँ कि उस रोड मैप के मुताविक आगे बढ़ने के लिए सरकार को जो भी निर्णय लेने होंगे वे लेगी और इसके लिए जो भी हमारे संसाधन है। मैंने प्रारम्भ से ही कहा 2007 में जब बाढ़ आई तो मैंने उसी दिन कहा था कि राज्य के खजाने पर सबसे पहला अधिकार आपदा पीड़ित का है आपदा प्रभावित का है इसलिए आपदा प्रबंधन के लिए जो भी संसाधन की जरूरत हो उसे हम सब को मिलकर मुहैया कराना होगा। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो आत्मघाती होगा। इसलिए आप इस विषय पर चर्चा करिये और इससे एवेयरनेस आयेगा लोगों में जागृति आ रही है और ये जो आज परिस्थिति है कहा गया है न कि .... तो आज माहौल है लोग आपदाओं की चर्चा कर रहे हैं भूकम्प के झटके की चर्चा कर रहे हैं एक दूसरे से पूछ रहे हैं कि कैसा लगा, कितने देर तक लगा, क्या कर रहे थे? हमसे भी लोगों ने पूछा कल क्या कर रहे थे? हम कल खाना खा रहे थे। कोई न कोई कुछ कर ही रहा होगा न। कोई चल रहा होगा, कोई बात कर रहा होगा, कोई लिख रहा होगा, कोई पढ़ रहा होगा। देखिये संयोग से दोनों बार जो आया है सब दिन में आया है। जरा कल्पना करिये यदि रात में आता तब क्या होता? कुदरत मेहरबान है उसने समय दिया है कि इस समय का उपयोग करिये अपने को भी बचाईए और धरती का भी सम्मान करिये।

बहुत–बहुत धन्यवाद।